शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

कश्मीर का सवाल

विनोबा

टूरिस्ट मानस से काम नहीं बनेगा

यहां कोई टूरिस्ट आता है, किसी दुकानदार, मजदूर या घोड़ेवाले से पूछता है कि कश्मीर के मसले के बारे में तेरी राय क्या है, और फिर अपना खयाल बनाता है। मैं कहना चाहता हूं कि जब वह घोड़ेवाले से पूछता है, तो घोड़े से ही क्यों नहीं पूछता कि घोड़े, तेरी क्या राय है ? जानकारी हासिल करने का यह भी कोई तरीका है ? कोई टूरिस्ट गांव-गांव जाने की और लोगों के दिलों में पैठने की तकलीफ तो उठाता ही नहीं है। उस हालत में वह कश्मीर के बारे में क्या जान सकता है ? हमें समझना चाहिए कि कश्मीर का मसला यानी हिंदुस्तान का मसला है, दुनिया का मसला है।

हल कब हो ? जब जागतिक वातावरण बनेगा

इन सब मसलों का हल कब होगा ? मैं कहना चाहता हूं कि इन सब मसलों का हल 'विश्व-युद्ध' से होगा या 'वर्ल्ड एडजेस्टमेंट' (विश्व व्यवस्था) से। या तो लड़ाई होगी और कुल दुनिया का खात्मा होगा और कुल मसले हल होंगे, या एक दिन ऐसा आयेगा, जब सबके मन ऐसे बनेंगे कि कुल दुनिया के मसले एक ही दिन में हल होंगे। उसके लिए मैं एक मिसाल देता हूं। हिंदुस्तान ने आजादी के लिए बहुत कोशिश की, इसलिए उसे आजादी हासिल हुई। लेकिन बर्मा ने, लंका ने आजादी के लिए क्या कोशिशें की थीं ? जिन्होंने खास कोशिश नहीं की थी, उन्हें भी आजादी हासिल हुई। एक ऐसा माहौल पैदा हुआ कि हिंदुस्तान के साथ दूसरे भी दो-चार देशों को आजादी मिल ही गयी। यानी एक जागतिक वातावरण बनता है और काम हो जाते हैं। इसी तरह इसके आगे ये लटकने वाले सवाल भी कुल के कुल एक दिन में हल होंगे। यह तब होग, जब हम मन से ऊपर उठेंगे और सुप्रामेंटल लेवल (अतिमानस भूमिका) पर जाकर सोचेंगे।

आज मन से से मन टकराता है, इसलिए सब मसले लटकते ही रहेंगे। छोटी नजर से सोचने से मसले हल नहीं होंगे। विज्ञान के जमाने में हम बहुत नजदीक आ रहे हैं। इसलिए यह नहीं हो सकता कि हम कोई मसला अलग से हल कर सकें। इसलिए ये सारे मसले लटकते रहेंगे और फिर होली का दिन आयेगा, तब सारे कागजात जलाये जायेंगे। कश्मीर के, गोवा के, तिब्बत के, कुल के कुल मसलों के कागजात एकदम जलाये जायेंगे। इन कागजात को आग लगाने वाले लोग होंगे, वे सुप्रामेंटल लेवल अतिमानस की भूमिका पर सोचने वाले लोग होंगे। मन की भूमिका पर सोचने वाले समस्याओं का हल नहीं कर सकेंगे। पुराने जमाने में हम किसी एक विषय पर जज्बा पैदा करते चले जाते थे, उसी पुरानी मन की भूमिका पर काम करने से कोई मसला हल नहीं होगा। इसलिए अब हमें अपने भारत की पुरानी कुवत, ताकत, जो रूहानियत में है, उसे बाहर लाना होगा। उसी ताकत से कश्मीर क, हिंदुस्तान के ओर दुनिया के मसले हल होंगे।

जब दिमाग के साथ दिल भी बड़ा बनेगा

आज भी हम छोटे दायरे में सोचेंगे, तो बिलकुल गये-बीते साबित होंगे। हमें समझना चाहिए कि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हम दिल बड़ा नहीं बनायेंगे, तो इस जमाने में टिक नहीं सकेंगे। आज के सारे झगड़े इसीलिए हो रहे हैं कि इंसान का दिमाग तो विज्ञान के कारण बड़ा बना है, लेकिन दिल बड़ा नहीं बना है। इसके आगे हमें अपना दिल बड़ा बनाना होगा।

जब ए-बी-सी ट्रँगल बनेगा

भारत की आजादी को मजबूत करना है, तो नयी भूमिति सीखनी होगी। वह भूमिति मैंने कश्मीर में खोजी है। वहां लोग कहते थे कि 'जे एण्ड के'। हमने कहा कि शायद आप लोगों ने अंग्रेजी पढ़ी होगी। 'जे' और 'के' के बाद 'एल' आता है। तो आपको कहना चाहिए जे एण्ड के एण्ड एल जम्मू, कश्मीर, लद्दाख। लद्दाख आपका है, लेकिन उसका आप लोग कीाी स्मरण नहीं करते। इसलिए लद्दाख खत्म समझो।

यह मैंने कश्मीर में कहा था। उसके बाद उनके ध्यान में आया कि लद्दाख भी उनकी चीज है और उसकी भी रक्षा करनी चाहिए। संयोग ही कहिए, चीन ने हमला करके उसकी अहमियत भी समझा दी।

कश्मीर में मैंने ए, बी, सी ट्रँगल की भूमिति सिखायी। अफगानिस्तान, बर्मा और सीलोन एक नया त्रिभुज है। जब यह हो जायेगा, तो इससे हिंदुस्तान की रक्षा होगी। भारत को अब बहुत कठिन काम करना है। आवश्यकता यह नहीं कि ये तीनों देश एक हुकूमत में रहें लेकिन इस त्रिभुज की परिधि में आने वाले देशों का - अफगानिस्तान, बर्मा, सीलोन, हिंदुस्तान, तिब्बत, नेपाल, भूटान और पाकिस्तान का एक 'कान्फडरेशन' बने। तब विश्व में शांति होगी। और तब इन देशों के बीच के आपस के झगड़े भी मिटेंगे और कई प्रश्न हल होंगे। कश्मीर का हल भी इसीमें है।

मेरे अनुभवों का निचोड़

कश्मीर के मेरे अनुभवों का निचोड़ यह है कि दुनिया के मसले रूहानियत से ही हल होनेवाले हैं, सियासत से कतई नहीं। सियासत नाचीज है। जितना विज्ञान बढ़ रहा है, उतनी सियासत फीकी पड़ रही है। सियासत और विज्ञान एक होंगे, तो समझना चाहिए कि दुनिया खत्म होने वाली है। इसलिए हमें रूहानियत और विज्ञान, इन दोनों को जोड़ना चाहिए।

रूहानियत कैसे प्रकट की जा सकती है ? तो मैं कहूंगा कि गांव-गांव के लोगों को यह एहसास हो कि हमारा गांव एक कुनबा है। यों समझकर वे जमीन की मालिकी मिटा दें। गांव की एक सभा बनायें, जो यह जिम्मा उठाये कि गांव के हर शख्स को काम और खाना देना है। गांव के कुटीर उद्योग बढ़ाने का काम भी वह करे। इस तरह गांव-गांव अपना गांव यानी एक स्टेट ही हे, ऐसा महसूस करके अपना मंसूबा बनाये। फिर हम कहां रहें, भारत में, एशिया में या दुनिया में, यह सवाल ही नहीं रहेगा। हम अपनी जगह हैं और ईश्वर की गोद में हैं।

कश्मीर का नसीब खुद के और खुदा के हाथ में

आखिर कश्मीर का नसीब किसके हाथ में है ? मैं कहूंगा आपके ही हाथ में है, दूसरे किसी के हाथ में नहीं है। कहा जाता है कि कश्मीर का फैसला यहां के बड़े लोग करेंगे। कश्मीर के मसले का हल देहली में हो या दुनिया में और कहीं। लेकिन आप यह समझ लीजिए कि अगर अपनी जिंदगी किसी के हाथ में है, तो खुद के और खुदा के हाथ में है। खुद और खुदा, इन दो के सिवा तीसरे किसी का उसमें दखल नहीं है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हम अपने हाथ-पांव और दिल-दिमाग पर भरोसा करें, नेक काम करें और एक होकर काम करें। हम ऐसा करते हैं, तो हमारा नसीब एक हद तक हमारे हाथ में रहता है। उस हद के बाद वह और किसी के हाथ में है, तो खुदा के। हुकूमत के या दूसरे किसी के हाथ में नहीं। खुद और खुदा - ये दो नुक्ते मजबूत बनाओ। दोनों को जोड़ने वाली जो लकीर होगी, वही हमारा रास्ता होगा। लकीर दो नुक्तों से बनती है। उन दोनों को जोड़ने से हमारे लिए रास्ता बन जाता है।

'खुद' के मानी क्या है, ठीक तरह से समझ लीजिए। 'खुद' के मानी मैं अकेला, इस जिस्म में रहने वाला छोटा-सा जीव नहीं है। बल्कि 'खुद' यानी हमारा गांव। हम जिस गांव में रहते हैं, वह सारा गांव मिलकर 'खुद' बन गया है और हमें अपनी मिली-जुली ताकत बनानी है। गांववालों को समझाया जाय कि आपकी तरक्की का जिम्मा आप पर ही है, बाहरवाले तथा सरकार भी सिर्फ थोड़ी मदद दे सकते हैं। इसलिए दो बातें याद रखिए - (1) सारा गांव मिलकर हम 'खुद' बन जायें, (2) खुदा को यद करें, बीच में किसी को दखल न देने दें।

हमने देखा कि जम्मू और कश्मीर का जो मसला है, उसका अंतर्राष्ट्रीय सवाल तो तब हल होगा जब अंतर्राष्ट्रीय हालात बदलेंगे और हिंदुस्तान, पाकिस्तान, चीन, रूस, अफगानिस्तान आदि जिन-जिनका कश्मीर से संबंध आता है, उन सबके मन में मसला हल करने की बात आयेगी। जब उन सबके मन में ऐसा खयाल आयेगा, तब सिर्फ कश्मीर का मसला ही नहीं, बल्कि दुनिया के सभी मसले हल होंगे। परंतु जहां तक कश्मीर का सवाल हे, वह तब हल होगा, जब यहां के लोग अंदरूनी ताकत महसूस करेंगे। होना तो यह चाहिए कि गांव-गांव के लोग अपनी जमात बनायें और एक-दूसरे के लिए मर-मिटने को तैयार हों। (शेषामृतम, विनोबा साहित्य, खंड 20)